सभी अनित्य हैं, क्योंकि स्वयं शरीर ही नाशवान् है। जीवन्मुक्त पुरुष की किसी अनित्य पदार्थ में अभिरुचि नहीं रहती। भगवदीय रसानन्द का पूर्ण ज्ञाता जीवन्मुवत पुरुष मिथ्या सुखोपभोग के उन्मुख कैसे हो सकता है? पद्मपुराण का वचन है—

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दचिदात्मनि।
इति राम पदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते।।

"योगीजन परतत्त्व में रमण करते हुए अपरिमित चिदानन्द का आस्वादन करते हैं। इसी से उस परब्रह्मतत्त्व को 'राम' कहा जाता है।"

श्रीमद्भागवत में भी उल्लेख है—

नायं देहो देहभाजां नृलोके कष्टान् कामानर्हते विड्भुजां ये।
तपो दिव्यं पुत्रका येन सत्त्वं शुद्‌ध्येद्‌ यस्माद्ब्रह्मसौख्यं त्वनन्तम्।।

"हे पुत्रो! इस मनुष्ययोनि में इन्द्रियसुख के लिए अधिक श्रम करना व्यर्थ है। विषयसुख तो मलभक्षी शूकरों को भी सदा प्राप्त रहता है। इसकी अपेक्षा, इस मनुष्य जीवन में तुम्हें तप करना चाहिए, जिससे पवित्र होकर अपरिमित ब्रह्मसुख का आस्वादन कर सकोगे।" (श्रीमद्‌भागवत ५.५.१)

अतः जो यथार्थ योगी हैं, वे उन इन्द्रियसुखों की ओर आकृष्ट नहीं होते, जो नित्य-निरन्तर भवरोग के कारण हैं। जीव में जितनी अधिक भोगासक्ति होगी, उतना ही वह प्राकृत दुःखों में अधिक बँधेगा।

22/4

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः।।२३।।

शक्नोति=समर्थ है; **इह एव**=वर्तमान देह में; **यः**=जो; **सोढुम्**=सहन करने में; **प्राक्**=पूर्व; **शरीर**=शरीर; **विमोक्षणात्**=त्यागने से; **काम**=काम; **क्रोध**=क्रोध से; **उद्भवम्**=उत्पन्न; **वेगम्**=वेग को; **सः**=वह; **युक्तः**=योगी है; **सः**=वह; **सुखी**=सुखी; **नरः**=मनुष्य है।

अनुवाद

जो मनुष्य शरीर का नाश होने से पूर्व इन्द्रियों की उत्तेजना और काम-क्रोध के वेगों को सहन कर सकता है, वह इस संसार में योगी है और वही सुखी है।।२३।।

तात्पर्य

जिसे स्वरूप-साक्षात्कार के पथ पर उत्तरोत्तर स्थिर प्रगति की अभिलाषा हो, उसे इन्द्रियवर्गों को वश में करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। ये वेग छः प्रकार के हैं—वाणीवेग, क्रोधवेग, मनोवेग, उदरवेग, उपस्थवेग तथा जिह्वावेग। जो मनुष्य इन विविध इन्द्रियों के वेगों को और मन को वश में कर सकता है, उसे 'गोस्वामी' अथवा 'स्वामी' कहा जाता है। गोस्वामी तीक्ष्ण व्रतपालन द्वारा मर्यादित जीवन-यापन करते हुए इन्द्रियवेगों को पूर्णतया त्याग देते हैं। अतृप्त विषय कामना से क्रोध उत्पन्न होता है, जिससे चित्त, नेत्र और वक्षस्थल आदि अंग उत्तेजित हो उठते